ओं

शिव महिम्नापार स्तोत्रम

द्वारिका नाथ पंडिता (बेबस)
सोपोर कश्मीर

ॐ श्री गुरुदेवाय नमः

"स्यद बब महराज"



स्वामी श्री व्यदलाल जी महाराज 'स्यद मोल'

कश्मीरी भाषा की अतिरिक्षत स्वर मात्रायें

मात्रा	कश्मीरी अक्षर	हिन्दी अक्षर	कश्मीरी अक्षर	हिन्दी अक्षर	कश्मीरी अक्षर	हिन्दी अक्षर
अऽ	चऽर	चिड़िया	अऽछ	आंख	अऽन्य्	अंधी
आऽ	आऽस	मुख	राऽछ्य	राखी, रखवाला	आऽर	आलूबुखारा
उॅ	चुॅ	तुम	बुॅ	मैं	रुॅख	रेखा
ऊॅ	कूॅत्य	कितने	क्रुॅठय	कठिन	सूॅत्य	साथ
एं	में	मुझे	रैंह	ज्वाला	नेंह	निद्रास्थिति
ओं	छोंट	कमकद का	छ्योंट	जूठा	नोंट	घड़ा
य	द्यद	दादी	व्यद	विधि-रीति	स्यद	सिद्ध
औ	द्वद	दूध	ब्वद	बुद्धि	श्वद	शुद्ध
य्	कूॅत्य्	कितने	तीत्य्	इतने सारे	आऽस्य्	थे
्र	फ्रस	सफेदा का वृक्ष	क्रख	चीख	ब्रख	गिर जाना

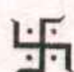
ॐ

दीक्षा दानं तपस्तीर्थं सनानं योगदिक क्रिया।
महिम्नस्तव पाठस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम।।

क॰अ॰: ग्वरुॅ संज़ दीक्षा दान तै तप-
यज्ञ तिर्थुकश्रान तै ब्य ज़प।
यिमौ सूॅत्य यिमूॅ यिमुॅ फल छीमेलान
तोत्र परनुॅ सात्य 16 ग्वनुॅ बडान।।

महेशन्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः।
अघोरान्नापरो मन्त्रो नास्ति तत्वं गुरो परम।।

शिव सुँदि ख्वॅतु थोंद छुन कांह दीवता।
महिमना पार थोंद छऽनुॅ काँह त्वता।
अगूर मंत्रर स्यठाह थोंद छु आस्वुन
गवरुॅ सन्ज़ि रूप थोंद कुस छु बास्वुन।।



महिम्ना स्तोत्र की कथा

स्वर्ग में राजा इन्द्र शिवलिंग की पूजा करता था। उनको फूलों की काफी आवश्यकता होती थी। स्वर्ग में पृथ्वी के जैसे फूल नहीं मिलते हैं इसलिए उसने गन्धर्वों के राज कुसुमदशन को जो स्वयं भगवान शिव का भक्त था इस काम के लिये नियक्ष किया।

कुसुमदशननामा सर्व गन्धर्व राजः
शिशुधार वर मौले देवदेवस्य दासः।
स खलु निजमहिम्नो भ्रष्ट एवास्य राषा-
ततवनमिदम, कार्षी द्विव्यदिव्यं महिम्नः।।

क॰अ॰: कुसुमदशन स्वर्गुक गंधर्व राजुॅ-
महादीव सुन्द दास ओसमुत छी

शिवुॅ सुँदि क्रोधुॅ ह्वाऽरुॅन दिव्य शक्ति-

महिमना पार परिथ प्राऽवुॅन भक्ति

वह (कुसुनदशन) पृथ्वी पर आता और एक राजा की फूल वाटिका से फूल तोड़ कर ले जाता था। राजा स्वयं शिव लिंग की पूजा करता था। हर दिन एक सौ दूध के घड़ों से शिव लिंग का स्नान करता था। और पूजा में बहुत फूल लगाता था। इसी लिए उसने यह वाटिका बनाई थी। गन्धर्व राजा के फूल लेने से फूल कम होते थे माली लोग बहुत परेशान हुए। उन्होंने रात दिन रखवाली का प्रबन्ध किया। एक रात उन्होंने फूल तोड़ने की आवाज सुनी मगर चोर नहीं दिखाई दिया। प्रात: उन्होंने यह सारा मामला राजा को सुनाया।

राजा ने सारे नगर में ढिंढोरा पिटवाया कि जो कोई पुष्प चोर को पकड़ेगा उसको पुरस्कार दिया जाएगा। एक ब्राह्मण ने जब यह सुना तो वह राजा के पास गया और चोर को पकड़ने की जिम्मेदारी ली। उसने राजा से कहा कि आप आज अपना निर्माल्य नदी में न डालें बल्कि सुरक्षित रखें। ऐसा ही किया गया। जब रात को गन्धर्व आया और उसने फूल तोड़ने शुरू किए तो ब्राह्मण ने निर्माल्य इस फूलवाड़ी के इर्द गिर्द डाल दिया। जब गंधर्व बाहर निकला तो उसने निर्माल्य को लांघ दिया। जिससे शिवजी कुपित हुए। उसकी दिव्यशक्ति समाप्त हुई और उसने मनुष्य रूप धारण किया। सिपाहियों ने उसको पकड़ा और कारागार में बन्द कर दिया। वह परेशान था कि क्या करूँ आखिर उसने कमरे में से मिट्टी खोदी और शिवजी का पार्थिव बनाया। भक्ति से शिव जी की पूजा की और शिव महिमा के स्तोत्र गाए। उसने इस लिंग पर फूलों की जगह एक एक श्लोक पर एक एक दाँत निकाल कर डाला। इस कारण उसका नाम पुष्पदन्त पड़ा। और इस तरह शिव महमना स्तोत्र बन गया। शिव जी प्रसन्न हुए और राजा समेत पुष्पदन्त को दर्शन देकर मुक्त कर दिया।



ॐ नमः शिवाय

कर्पूर गौरं करूणावतारं संसारसार भुजगेन्द्र हारम
सदा रमन्तं ह्रदयाय बिन्दे भवं भवानी सहिंत नमामि।।

क०अ० करूणा अवतार कोफूर रंगॅू सफेद
संसारूक सार युस छु आसान
वासुक नाग यस हटि कुय्य छी हार
हर सात मंज़ ह्रदयस रमन कराण
इथि गवनुॅ सोंसथिस माजि सान शंकऽरस
बारंबार छुसबु पादन नमान

आधीनामगंध दिव्यं व्याधीनां मूलकृन्तनम।
उपद्रावाणां दलंन महादेवमुपास्महे।।

क०अ० आऽदीनन हुन्दयुस औषद छु आसान,
व्याधन मूलै युस छु कासान।
उपद्रवन युस द्रोत छी दिवान
तस महा दीवस बुॅ पूज़ा करान
शिव जिया कनथाव बोज़ वील ज़ारी
पोश हो बुॅ लागय चाऽरय चाऽरिये
प्राराण डेडि तलअथुॅ दाऽरय दाऽरि
पादन लगै ब पाऽरय पाऽरिये

(यह दोहा इस शलूक में और आगे के हर शलूक में मिलाकर पढ़ना चाहिए ताकि सतोत्रर को भजन का रूप मिले।

अहं पापी पाप क्षपण निपुणाः शंकर भवान
अहं मीतो मीता भ्य वितरणे ते व्यसनिता।
अंह दीनो दीनोद्धरणं विधिा सज्जस्त्वमितरत
न जानेहं वक्तुं कुरू सकल शौचे मयि कृपाम।।

क०अ० छुस व पापी पापन छुक च कासावुन
ज्ञयानी शंकर छुक च़ आसावुन।।
छुस व खूचमुत खोफस छुक च कासवुन-
द्वख्यिन सारी दवुख च कासवुन।।
अरितन तार दिवान छुक बनिथ अरी-
कासतम स वन्य लाचरियें।
प्राराण..........

जनस्त्वदपादाव्ज श्रवण मनन ध्यान निपुणाः
स्वयं ते विस्तीरर्ण न खलु करूणा तेषु करणा।
भवे लीने दीने मयि मनन हीने न करूणा
कंथ नाथ ख्यातस्त्वमसि करूणा सांगर इति।।

क०अ० शंकर भक्तिज़न चान्यन चरन कमलन-
छीकराण श्रवन मनन तुँ निध्यासन।
संसारुँ सागरस पानै अपोर तराण -
च्यान्यन कटाखन हुन्द न हाज्यत तिमन।।
फटमितिस मूडस करख नै च़ यारी-
कुस वन्यि छुक च़ हितकाऽरिए।।
प्राराण..........



श्री पुष्पदंतो उवाच

ओं महिम्नः पांर ते परमविदषो यद्य सद्दशी
स्तुतिब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः।
अथावाच्यः सर्वः स्वमतिपरिनामावधि गृणन
ममाप्येष स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः।।1।।

क०अ० महिमा चूँन्य अपार हारिथ रूद्य साऽरी।
ब्रह्मा त व्यंयि दिवता सारी।।
तोति पूज़ कऽहऽय बॅज़ अनुसाऽरी।
बुॅति पूज़ करै ही त्रपुराऽरी।।
ज़ानान छुस न बो अथ अधिकाऽरी।
कर सवीकार म्युॅन्य ज़ाऽरिये।। प्राराण..........

अतीतः पन्थानं तव स महिमा वाङ्मनसयो
रतदव्यावृत्त्यायं चकितर्माभिद्यत्ते श्रतिरपि।।
स कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः
पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः।।2।।

क०अ० अद्रष्ट छुक मन तै वानी किन्य।
आश्चर्य छुक वीद के सार किन्य।।
दुर्लब ज़ानुन छुक च़ त्वतायि किन्य।
विश्य कांह छुक न व्यच़ार किन्य।
भक्त आऽदीन बोले नाथ चन्द्रम दाऽरी।
चानि रूप मस्त गय साऽरिये।। प्राराणा..........

मधुस्फीता वाचः परमममृतं निर्मितवत-
स्तव ब्रह्मन् किं वागपि सुरगुरोर्विस्मय पदम।
मम त्वेतां वाणीं गुणाकथनपुरायेन भवतः
पुनामीत्यर्थेऽस्मिन्पुरमथन बुद्धिर्व्यवसिता।।3।।

क०अ० निर्मान कऽरुँथ निंदोष अमृतवाऽनी।
आश्चर्य क्या करि सुर ग्वरुँ वानी।।
अवै म्याऽन्य वानी ही त्रपुराऽरी।
श्वद गच्छान चानि गुनगान सूँती।।
तवै म्याऽन्य ब्वद्ध द्रढ निश्चय करिथ्य।
गायन छिथ़ावान ज़ाऽरिये।। प्राराणा..........

तवैश्वंर्यं यत्तज्जगदुदयरक्षाप्रलय कृत
त्रयीवस्तु व्यस्तं तिसृषु गुणाभिन्नासु तनुषु।
अभव्यनामस्मिन्वरद रमणीयामरमणीं
विहन्तुँव्याक्रोशीं विदधत इहैक जडधिय:।।4।।

क०अ० ही वरद चूँनिस ऐश्वरी रूपस।
गुनातीत त्र्ययि कारणुँ स्वरूपस।।
पाऽपी तुँ बेकुँल खंडन करनस।
न्यन्दया कराण छी अथ स्वरूपस।।
शूबान तिमनुँय बाऽस्थि हितकाऽरी।
मूल आसान छि तिम चारिये।। प्राराणा..........

किमीह: किंकाय: स खलु किमुपायस्त्रिभुवनं
किमाधारो धाता सृजति किमुपादानमिति च।
अतर्क्यैश्वर्ये त्वय्यनवसुरदु:स्थो हतधिय:
कुतर्कोयं कांश्चिन्मुखरयति मोहाय जगताम।।5।।

क०अ० कमि य्यच्छायि कमि शरीरुँ कमि ओपाये।
कमि आधार कमि सूँत्य कथ जाये।
ब्रह्माण्ड बनोवुथ कमि सन राये।
वाद विवाद लोगुख जायि जाये।
बेकलौ बकवास कोंर च्वपाऽसी।
ब्रम किन छक बेकराऽरिये।। प्राराण..........

अजन्मानो लोका: किमवयववन्तोपि जगताम
अधिष्ठातारं किं भवविधरना इत्य भवति।
अनीशो वा कुर्याद्भु वनजनने क: परिकरो
यतो मन्दास्त्वां प्रत्यमरवर संशेरत इमे।।6।।

क॰अ॰ ज़ीवन ज़नम दोर प्राऽवुँण काया।
जन्मुँ रोंस रूप ज़ान्ह क्या सु प्राव्या।
च्य रोंस ब्यारव काँह ज़गि व्वपदाव्या।
गवड्ँु छै ज़ानुँन्य चूँन्य माया।।
ब्रहमाण्ड बनावनस बेकुँल साऽरी।
सामग्री कति अनन छि चाऽरिये।। प्रारणा.........

त्रयी सांख्यं योग: पशुपतिमतं वैष्णवमिति
प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमद: पथ्यमिति च
रूचीनां वैचित्र्याद्दजुकुटिल नानापथ जुषां
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव।।7।।

क॰अ॰ वीद सांख्य योग किन्य ब्योंन ब्योंन वतुँ छि
वष्णो तुँ शिव मत ती वनान छी
वुलट स्यजुँ वतुँ यिम सतज़न रऽटान छी।
चूँनिस सरूपस वातान छी
आर नाल ब्योंन ब्योंन स्वोंद होंल जारी।
सोंदरस सॉंत्य रलान साऽरिय।। प्राराण..........

महोक्ष: खटवाङ्गं परशुरजिनं भस्म फणिन:
कपांल चेतीयत्तव वरद तन्त्रोपकरणम।
सुरास्तां तामृद्धिं विदधति भवदभ्रूप्रणिहितां
नहि स्वात्मारामं विषयये मृगतृष्णा भ्रमयति।।8।।

क॰अ॰ वरदायक दाँद मृगछल तुँ तबरा।
खूर बसमा स्वरुफ तुँ कलुँ ख्परा।।
घर वेठ चूँनी अऽथ्य पय्ठ च्य सबरा।
दर्यदुँर पान दोंयमन करि क्या।।

(मगर) दीवन इशारुं चानि ऐश्वरी जारी।
सिधन दूर छिन्नम साऽरिये।। प्रारण..........

ध्रंक कश्चित सर्वं सकलमपरस्तु ध्रुवमिदं
परो ध्रौव्याध्रौव्ये जगति गदति व्यसतविषये।
समस्तेऽप्येतस्मिन पुरमथन तैर्विस्मिन इव
स्तुवन्जीह्रेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता।।9।।

क॰अ॰ किहं वनान सत किंह अस्त जगतस छी।
किहँ वनान सत असत द्वनवै छी
ब्योंन ब्योंन रूपौ असत्वोंती कराण छी।
अमि किन ही शिव हाऽराण बुँय।।
अवै मंदछन रोंस छम त्वता जारी।
कथल छुस करतम साऽ याऽरिये।। प्राराणा.........

तवै श्वर्यं यत्नाद्यदुपरि विरिश्चो हरिरधः
परिच्छेतुँ यातावनलमलस्कन्द वपुषः।
ततो भक्ति श्रद्धाभरगुरु गृणादभ्यां गिरिशयत
स्वयँ तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलति।।10।।
क॰अ॰ प्रज़लवुन जयोती लिंग चूयोन मेनिने आय।
ब्रह्मा तुं विष्णो हर्योर तुं ब्वन दराय
सार लोंबुख न द्वनवै थऽकिथ वापस आय।
त्वता करनि लऽग्य् लोल तै माय
दर्शन चानि सूँत्य मत गोख जारी।
भक्ति चानि फल बाऽरिये।। प्राराणा..........

अयत्नादासाद्य त्रिभुवनमवैरिव्यतिकरं
दशास्यो यद्बाहू नभृत रणकराडू परवशाना
शिरः पद्माश्रेणी रचित चरणाम्भोरूहबलेः
स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुर हर विस्फूर्जितमिदम।।11।।

क॰अ॰ पम्पोश कऽनि कलुँ लाऽग्य चानि पूज़ाय-
रावनन भक्ति हाऽव जायि जाये।।
दुशमन कान्हति रूदुस न कुनि जाये-
त्र्यनवे भवन आऽदीन तस आऐ।।
मछिबल छाँड़ान बलवीर च्वपाऽरी-
भक्ति चानि फल बेशुमाऽरिये।। प्रारणा.........

अमुष्य त्वत्सेवा सम अधिगतसारं भुजवंन
बलात्कैलासेपि त्वदधिवसतौ विक्रमयत:।
अलभ्या पातालेऽप्यलस चलितांगुष्ठशिरसि
प्रतिष्ठा त्वय्यासीद ध्रवमुपचितो मुह्यति खल:।।12।।

क॰अ॰ राक्नस बल म्यूल चानि सीवाये।
काऽलास तुलनि लोंग पननि जाये।।
आलिंस नय्ठ च्यल वोत कथ जाये।
तल पाताल ति मीजिस न जाये।।
द्वशठस यलि छुक कासान खाऽरी।
मुह ज़ाल छुस वलान च्वपाऽरिये।। प्रराणा........

यद्दद्धिं सूत्राम्णो वरद परमोच्चैर अपि सतीम
अधश्चक्रेबाण: परिजनविधेयत्रि भुवन:।
न तच्चिंत्र तस्मिन वरि-वसि-तरि त्वत-चरणायो-
र्नकस्याप्युन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनति:।।13।।

क॰अ॰ ही वरद। इन्द्ररस कूँच थऽज़ ऐश्वरी।
चानि वर बानास्वरण नियि सूय।।
त्र्यन्वै भवन आऽदीन तस सपदी।
भक्तत्सि किच़ छा यि हाऽराणी।।
भक्ति युस शरण आऽय ही त्रोंपराऽरी।
ऐश्वरी तऽम्य प्राव च्वपाऽरिये।। प्राराणा.........

अकाण्ड ब्रह्माण्ड क्षय चकितदेवा सुर कृपा
विधेयस्यासीद्यस्त्रिनयन विषं संहृत वत:।
स कलमाष: कराठे तव न कुरूते नश्रिय महो
विकारोपि श्लाध्यो भुवन भय भङ्ग व्यसनिन:।।14।।

क॰अ॰ त्र्यन्यथुँर दाऽरी। काल कॅटु विश किन।
स्वर अस्वर खौफ़जद गय अमि किन
कृपा कऽरुँथ ब्रह्माण्ड खैय गच्छनुं किन।
विश चोथ रुत बऽन्योरव शूबाय किन।।
ब्रह्माण्ड नाशुक भय युस व्यचारी।
शूबिदार तस वनान साऽरिये।। प्राणा........

असिद्धार्था नैव क्वचिद् अपि स देवासुरनरे
निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखा:।
स पश्यन्नीश त्वामितरसुर साधारणाम् अभूत
स्मर: स्मर्तव्यात्मा नहि वशिषु पथ्य: परिभव:।।15।।

क॰अ॰ जगतस ज्येनुँवुन कामदीवुन तीर।
दीव दानव मनुष्यन कराण अऽसीर।।
दीवता ज़ानिथ लोयिनै यह्य तीर।
ज्ञान नेत्रकि नार ज़ोलथस शरीर।।
यूगियस अनादर करुण छा हिताऽरी।
छु नुं शूबान गच्छान खाऽरिये।। प्राराण.........

मही पादाघाताद्रवजति सहसा संशयपदं
पदं विष्णोर्भ्राम्यदभुज परिघरूग्ण ग्रहगणम।
मुहर्द्यौ दौंस्थ्यं यात्यअनिभृत जटाताडित तटा
जगद्रक्षायैत्वं नटसि ननु वामेव विभुता।।6।।

क॰अ॰ नटुँरांजुं च्यानि ख्वरचै तालि सूँती।
समशयस मंज़ गच्छान छैय पृथवी।।
चानि ओरुँ योरुँ नऽरि गिलवन सूँती।
तारागण परेशान सपदान छी।।

जटि चै चँज़ि स्वर्गस लाचऽरी।
च्यून नचुन तोति हितकारिये।। प्राराण.........

वियव्द्यापी तारागण गुणित फेनोद्गमरूचिः
प्रवाहो वारां यः पृषतलघुद्दष्टः शिरसि ते।
जगदद्वीपा कारं जलधिवलयं तेन कृतमि-
त्येने नैवौन्नेयं धृतमहिम दिव्यं तव वपुः।।17।।

क॰अ॰ आकाशस व्यापान युस गंगि जल।
नप नप करवुण बयि निर्मल।।
जटि मंज़ कतुॅरह बासान निर्बल।
स्तवे स्वॅदुर ज़गि बऽरिन जल जल।।
पृथ्वी बनाऽवुॅन दॅूप शूब्दारी।
महिमा चॅून्य बे शुमाऽरिये।। प्राण..........

रथ क्षोणी यन्ता शतधृतिरगेन्द्रो धनुरथो
रथोङ्गे चन्द्रार्कौ रथ चरण पाणिः शर इति।
दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृण माडम्बर विधि-
र्विधयैः क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्राः प्रभुधियः।।18।।

क॰अ॰ पृथिवी रथ त ब्रह्म रथ बान।
चन्द्रं त सूर्य पयि समीरू तीर कमान।।
विष्णो तीर कूत बनोवुथ सामान।
त्रपुरासुर घासुॅ ओस ना ज़ालुन आसान।।
ग्युन्दना करुन सॅूथ्य सेवुॅकन सॅूती।
सामुॅरथ वान ब्वद ज़ाँह न हारिये।। प्राराण.........

हरिस्ते साहस्रं कमल बलिमाधाय पदयो-
र्यदेकोने तस्मिन निजमुदहरन्नेत्र कमलम।
गतो भक्तयुद्रेकः परि नतिमसौ चक्र वपुषा
त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम।।19।।

क०अ० विष्णु च़र्नन पूज़ा छी कराणा।
अख सास पम्पोश न्यत लागान।।
पम्पोश कम गोस गौ स्यठाह हाऽराण।
नेत्र कऽडिथ लोगुन भक्ति सान।।
स्वदर्शन च़ऽकुॅर द्युतथस त्रपुराऽरी।
रक्षा करनि लॅग च्वपाऽरिये।। प्राण.........

क्रतौ सुप्ते जाग्रन्त्वमसि फलयोगे क्रतुमतां
क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते।
अतस्त्वां उत्प्रक्षय क्रतुष फलदान प्रतिभुवं
श्रतौ श्रदां बद्ध्वा द्दढ़ परिकर: कर्मसुजन:।।20।।

क०अ० यज्ञ समापती पत जागरत च़ रोज़ान।
यज्ञ करन वाऽलिस फल च़ बाऽगराण।
कर्म नष्ट गोमुत फल क्याह छु दिवान।
चानि आराधनाई फल छु मेलान।।
अवैय वीद शास्त्रन हन्दय अधिकाऽरी।
कर्म करणुॅ खाऽतुॅर तयाऽरिये।। प्राराण..........

क्रियादक्षो दक्ष: क्रतु पतिरधीशस्तनुभृताम
ऋषीणा मार्त्विज्यं शरणद सदस्या: सुरगणा:।
क्रतुभ्रंशस्त्वत्त: क्रतुफलविधानव्यसनिनो
ध्रवं कर्तु श्रद्धाविधुरमभिचाराय हि मरवा।।21।।

क०अ० यज्ञि ज़ानवुन दक्षप्रज़ापत ओस यज़मन।
दीव साक्षी रेय्श आऽस्य तति हुमन।।
फल दाता च़्य युथ हवन नाशस कोरथन।
अतिनाच्यौल न किन्ह रेषन तुॅ दीवन।।
चानि श्रद्धाय रोॅछ बोले बन्डाऽरी।
यज्ञस फल ना किन्ह लाऽरिये।। प्राराण.........

प्रजानाथं नाथ प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं
गतं रोहिद्भूतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा।
धनुष्याणेर्यातं दिवम अपि सपत्राकृतमंम
त्रसन्ते तेऽद्यापि त्यजति न मगृव्याधरभस: ।।22।।

क॰अ॰ काम हऽतिस ब्रह्माहस कोरि प्यठ डौल मन।
लज़ाई किन कोरि दोर हिरनी तन।।
ब्रह्मा कोरि पथ लारयोव बऽन्थि हिरन।
तीर लोयनस अव शिव शंकरण।
अमि भऽयि कोरि मृगिश्वर रूप दोर।
ब्रह्मा योरुँ व्याधुँ तारुख बन्योव।।

शिव बान योरुँ आऽदुँर निक्षत्र बनयोव।
व्याद तारकस पत पत लारयोव।।
व्यादस आऽदुँर कुनि नो छूरी।
यति आसि अतिया चाऽरिये।। प्रारण..........

अपूर्वं लावरायं विवसनतनोस्ते विमृशंता
मुनीनां दाराणां समजनि स कोपव्यतिकर:।
यतोभग्ने गुह्ये सकृऽपि सपर्या विदधतां
ध्रुवं मोक्षो श्लीलं किमऽपि पुरुषार्थ प्रसविते।।23।।
(यह श्लोक पुष्प दन्त का नहीं है किसी भक्त का है।)

क॰अ॰ चानि सुन्दर नंगुँ पानुक धयान कौर।
मनीश्वर त्रियौ यलि सूइ सौर।
क्रोधी मनस यि करुण स्यठाह खौर।
शाप किन्य तिमवुँय् लिंग अलग कौर।।
युस अथ लिंगस बनि पुज़ाऽरी।
मुक्षती तस पतैय लाऽरिये।। प्रारणा.........

स्वलावरायाशंसा धृत धनुषमह्वाय तृणावत
पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन पुषपायुधमपि।
यदि स्त्रैणं देवी यमनिरत देहार्धघटना-
दवैति त्वामद्धा वत वरद मगुधा युवत्य:।।24।।

क॰अ॰ गोरी हुँन्दि रूपुँ सूँत्य् सपनी असीर।
कामदीवन लोय कामुक तीर।।
सूर गोस गौरी वुछुनस फीरय् फीरय्
अर्धांगी बनिथ बनेयि बलवीर।।
आसकत रणि हुन्द वोंननै यूग दाऽरी।
त्रुँयि नो कुनि गाटुँ जाऽरिये।। प्राराणा.........

श्मशानेष्वा क्रीडा स्मरहर पिशाचा: सहचरा
श्चिता भस्मालेप: स्रर्गापि नृकरोटी परिकर:।
अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवम् अरिवलं
तथापि स्मर्तणां वरद परमं मङ्गलमसि।।25।।

क॰अ॰ छुक गिंदान शुमशान ही मंगलरूपी।
भूत प्रीत आसान छी सूँती।।
कल माल लाऽगिथ भसमा मलिथ्य।
युदवे चुँ बासान अमंगल रूपी।।
खोफनाक यि रूप च्यून तिमन मंगलकारी।
यिम आसान छि यूग दाऽरिये।। प्राराणा.........

मन: प्रत्यक्चित्ते सविधम अवधायात्तमरूत:
प्रहृष्यद्रोमाण: प्रमदसलि लोत्सञ्चितद्दश:
यदालोक्याह्लादं हृद इव निमज्ज्यामृत मये
दधत्यन्तस्तत्वं किमपि यमिनस्तत्किल भवान।।26।।

क॰अ॰ यिमुँ यूगी ज़न शम दम सोंसतुँय्
श्वास रूकिथ मन थ्यर करिथुँय्।।
मंज़ अऽश दारि के आँन्दुँ सरसुँय्।
परम आँन्दतिम प्रावान छी।।

युस यि आँन्द तिम अनभौ कराण छी।
शंकर सुछुक पानूँ आसान चुंय्।। प्राराण..........

त्वमर्कत्वं सोमस्त्वमति पवनस्त्वं हुतवह-
स्त्वमापस्तंव व्योम त्वमुधरणिरात्मा त्वमिति च
परिच्छिन्नामेंव त्वयि परिणतां बिभ्रतु गिंर
न विद्मस्ततत्तवं व्यमिह तु यत्त्वं न भवसि।।27।।

क॰अ॰ चुँय सूर्य तै ब्यियि चुँय चन्द्रम छुक।
चुँय वायू ज़ल अगनी छुक।।
चुँय आकाश छुक चुँय पृथ्वी छुक।
ही भगवान चुँय आतमा छुक।।
ब्योंन ब्योंन रूपौ स्वराण यूगधारी।
म्यूँनय् किन च़ प्रथ जाइ विहाऽरिये।। प्राराण.....

त्रयीं तिस्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमथो त्रीनपि सुरा
नकाराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिरभिदधत्तीर्णविकृति ।
तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरनुरन्धानमणुभिः
समस्त व्यस्तं त्वॉ शरणद गृणात्योमिति पदम।।28।।

क॰अ॰ ही शारनद। उों मंज़ त्रय्न अक्षरन।
त्रय्न लूकनदीवन शरीरन
त्रय्न व्रचन अवसथायन तुँ वीदन।
साकार रूपन कराण छि गायन
गायन चून कराण छी निराकरी।
त्रुरिया रूप ओंकाऽरिये।। प्रारणा..........

भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथेग्रः सहमहां-
स्तथा भीमेशानाविति यदमिधानाष्टकमिदम।
अमुष्मिन्प्रत्येकं प्रविचरति देव श्रुतिरपि
प्रियायास्मै धाम्ने प्रणि हित नमस्योऽस्मि भवते।।29।।

क॰अ॰ ही दीवुँ पशुपति रूद्र भव शर्व।
उग्र भीम एशान महादेव
इमै चूँन्य आऽठ नावयिमुँ सोंरय् दीवव।
वीदौभ्ययि अकि अकि मुन्यिव
च्य अथ तुरिया रूपस ही जटाधाऽरी।
नमस्कार बारंबाऽरिये।। प्रराणा.........

वपुष्प्रा दुर्भावादऽनुमितमिंद जन्मनि पुरा
पुरारेर्नैवांह क्वचिदपि भवन्तं प्रणतवान।
नमन्मुक्त संप्रत्यतनुरहम ग्रेप्यनतिमान
महेश क्षन्तव्यं तदिदं अपराधद्वयमपि।।30।।

(यह श्लोक पुष्पदन्त का नही किसी भक्त का है।)

क॰अ॰ ही शिव यलि जनमस यिथ कोंरूम ब्यचार।
पतिमि जन्म कोंरमै नुँ ज़ान्ह नमस्कार
मुक्ती प्राऽविथ छुस कराण चय जैकार।
ब्रुन्ह कुन ति कति वन्य करुँ नमस्कार
यिमन दोंन पापन ही त्रपुरारी।
क्षमा कर छम साऽ लाचाऽरिये।। प्राण..........

नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठाय च नमो
नमः क्षेदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः।
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमो
नमः सर्वस्मै ते तदिदमितिसर्वाय च नमः।।31।।

क॰अ॰ नऽज़दीक तुँ दूर आसवुन च्य् नमस्कार।
विराठ त सूक्षमस च्य नमस्कार।।
चूँनिस व्रद रूपस म्योन नमस्कार।
छुस युवन रूपस नमान बांरबार।।
सारिवुँय रूपौ ही जटादाऽरी।
नमस्कार कर सवीकाऽरिये।। प्रारण..........

बहलरजसे वि श्वोपत्तौ भवाय नमो नमः
प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः।
जनसुखकृते सत्वोद्रिकौ मृडाय नमो नमः
प्रमहसिपेद निसत्रैगुराये शिवाय नमो नमः।।32।।

क॰अ॰ सृष्टी करुँता रज़ूगन सोंसथिस।
ब्रह्मा रूपस छी नमस्कार।।
प्रलये समये तमूगन सोंसथिस।
रूद्रुँ रूपस छी नमस्कार।।
ऐश्वरी दिवुन सतूगन सोंसथिस।
मृड रूपस छी च्य नमस्कार।
ज्य ज्य कार तस युस निराकारी।
त्रिगुनातीत जोती दारिये।। प्राण..........

कृशपरिणति चेतः क्लेशवश्यं क्व चेदं
क्व च तव गुण सीमोल्लङ्घिनी शश्वदृद्धि।
इति चकितममन्दी कृत्य मां भक्तिराधा
द्वरद चरणायोस्ते वाक्य पुष्पोपहारम।।33।।

क॰अ॰ ही वरदायक कलेश सोंस चित म्यून।
गव्वि कया नाश रोंस महिमा च्यून।।
त्रिगुनातीत च्यून महिमा छु आस्वुन।
त्र्यनकालन पर छु सु बासवुन।।
भय हऽतिस भक्ति चूँन्य करि स्यठाह यारी।
शब्दुँ पोश कर स्वीकाऽरिये।। प्राराण..........

असिर्तागरिसमं स्यात्कज्जंल सिन्धुपात्रे
सुरतरुक्रशाखा लेखनी पत्रमूर्वी।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं
तदपि तव गुणानःमीश पारं न याति।।34।।

क॰अ॰ ही शिव मीलिन्दुर युदवै सोंदुर बनि।
क्रुहुन थोंद पर्वत तऽथ्य् मील बनि

कलप लऽण्ड हरगाह तऽथ लेखिनी बनि।
पृथ्वी ति पान तथ कागज़ बनि
शारदा महिमा लेखुन थाविजाऽरी।
तोति नो पोशि सु हा हाऽरिये।। प्राराण..........

श्री पुष्प दन्त मुख पङ्कजनिर्गतेन
स्तोत्रेन किल्विषहरेणा हरी प्रयेणा।
कराठस्थितेन पठितेन समाहितेन
सुप्रीणितो भवति भूत पतिर्महेशः।।35।।

(यह शलोक पुष्पदन्त का नहीं है किसी भक्त का है।)

क॰अ॰ पंपोश म्वखुँ ग्यवमुँच़ पोंष्पुँ दन्तुॅन्य।
शिव त्वता छै कया शूबवुॅन्य।।
पापन त शयापन प्रथ विज़ि गालवुॅन्य।
शिव नाथस छैय स्यठाह प्रयवुॅन्य।।
युस याद करि परि ब्ययि धयान दाऽरी।
तस प्रसन रोज़ान जीवादाऽरिये।। प्राराणा..........

सोपूरय बेबस करान वीलज़ारी। कन थव ही त्रपुराऽरिये।।
अज्ञान गटुँ कासुस च्वपाऽरी। ज्ञान प्रकाश थाव तस जाऽरिये।।
दया चूँन्य करि तस स्यठाह यारी। भाव पूज़ कर सवीकाऽरिये।।
प्राराण डेडितल अथुँ दाऽरय् दाऽरी। पादन लगैय बुँ पाऽ्रय पाऽरिये।।
शिवजीया कन थाव बोज़ वील ज़ाऽरी। पोष हो भुँ लागय चाऽरय् चाऽरिये।।

द्वारिका नाथ पंडिता बेबस
(सोपोर काशमीर)

शिवजी की बाल अवस्था में मानसिक पूजा

1. म्य हा टोठ शंकर ल्वलि ललनोवुम - लोलुँ मंजुले लोल ललनोवुम।
म्य हा चूरि थोवुम कूँसि नो होवुम - लोलू मंजुले..........

2. मन मन्द्रस मंज़ वास करनोवुम - हर सातुँ थोवम तऽमय् सुन्द ध्यान।
लोलुँच्य बोल भाऽशय् तति करनोवुम - लोलूँ मंजुले लोल ललनोवुम।

3. लोला बोंरमस अदुँ चीर सोवुम - हो हो कोंरमस लोलुँ मायि सान।
ल्वलि ललनोवुम त ख्वनि सुलनोवुम - लोलुँ मंजुले लोल ललनोवुम।

4. आदि प्रभातन सुलि वुँज़नोवुम - नाल मति रोंटुम तुँ बोंरमस लोल।
सीन मच़राऽविथ हालि दिल बोवुम - लोलुँ मंजुले लोल ललनोवुम।

5. अंग अंग शोडश श्राण करनोवुम - रोपुँ तन वथरम वाँरु होशि सान।
लोल म्य वुच्छमस लोलुँ वुच्छनोवुम - लोलुँ मंजुले लोल ललनोवुम।

6. द्वादश पंपोश मय हा फवलनोवुम - तऽथ्य प्यठ थोवुम टोठ जानान।
लोलुँ ज़रबाफे लोल पाऽरोवुम - लोलुँ मंजुले लोल ललनोवुम।

7. गण्डिथ्य जट मूकट लागनोवुम - प्रज़लान चन्द्र शोभायमान।
वासुक हटि पोशौ शोलनोवुम - लोलुँ मंजुले लोल ललनोवुम।

8. डयकस चन्दन लीप करनोवुम-क्वंग टयकि त्र्यय न्यथुँर क्याह शूभान।
भाव पोश अरग श्रेयरि लागनोवुम - लोलुँ मंजुले लोल ललनोवुम।

9. कन्ठगन्न धूप दीप तस आलनोवम - कोफूर ज़ोलमस नमरिथ पान।
चामर कोंरमस शोक शोलोवुम - लोलुँ मंजुले लोल ललनोवुम।

10. म्वरवतुँ जालारुक छ्यतुँर बनोवुम - रंग रंग जऽरमस लाल जवहर।
भाव सान शंकरस शेरि प्यठ थोवुम - लोलुँ मंजुले लोल ललनोवुम।

11. भाव श्रदाय हुन्द वसथुँर थोवुम - शूबान क्या छी टोठ जानानं
साश़टाँन प्रणाम कल नमरोवम - लोलुॅ मंजुले लोल ललनोवुम।

12. जुव जान टोठ पान आयितन म्य थोवुम - दखिनाई किन कोर्मस अर्पण।
प्रकरम करिथुॅय तस पुशरोवुम - लोलुॅ मंजुले लोल ललनोवुम।

13. खिर खंड नाबद थालौव खोलुम–ब्रूण्ठ कनि थोवुम जानानस (भगवानस)
लोल तै मायि सान रचि़ रचि़ ख्योवुम - लोलुॅ मंजुले लोल ललनोवुम।

14. ज़ानान छुस न किन्ह ती जाननोवुम - दयायि हुॅन्दय बर मच़रऽविन।
सास बासकर प्रकाश तति हावनोवुम - लोलुॅ मंजुले लोल ललनोवुम।

15. लोल लोलस सात्य म्योल करनोवुम - अद वन्तुॅ बेबस कति सन रूद।
बा होश मसती हुन्द मस चोवुम - लोलुॅ मंजुले लोल ललनोवुम।

16. म्य हा टोठ शंकर ल्वलि ललनौवम। खवनि सुलनोवुम– लोल मंजुले....
म्य हा चूरि थोवुम कूॅसि नो होवुम - लोलुॅ मंजुले लोल ललनोवुम।

(द्वारिका नाथ पंडिता बेबस)
सोपोर काशमीर



आठ भाव पोश

अहिंसा प्रथमं पुष्पं पष्पमिन्द्रनिग्रह:।
सर्वं पष्पं दयाभूते पुष्पं शान्तिर्विनिग्रह:।
शम: पष्पं तप: पष्पं धयानं पुष्पं च सप्तमम।
सत्यं चैवाष्टमं पुष्पमेतैस्तुष्यति केशवे।

(अग्नि पुराण 202/17-18)

आऽठ भावुॅ पोश

आऽठ भावुॅ पोशौ पूज़ कर हरसी-
यिमे पोश पूजि लाग दैय सई ची।
सु हा ताऽरय मुच़रावि त्यलि गयान बरसी-
द्वछि-2 पोश लाग शंकरसई।।

ज़ऽरयर मुॅ वातनाव तन किन्य मन किन्य-
क्रयि किन्य वाक किन्य सुमरनि किन्य।
अहंसा व्रत तारवुनॅ भव सर्सी-द्वछि द्वछि..........

इन्द्रय कछि रठ मन थ्यर कर च़्य-
शमरुख त चमरुख अन्दरी च़्य।
इन्द्रय निग्रह मन शवद कर च़्य-द्वछि द्वछि..........

कछि रठ मन च़्य यछि पछि रोज़ च़्य-
बुधी आधीन मन थाव च़्य।
शमुॅच अवस्था ज्ञानुक बर छी-द्वछि द्वछि..........

दया करवुन हर सातुँ बन च़्य-
दादध्यन त द्रवखन सूँत्य रोज़ च़्य।
दयायि कुठरे मुच़राव बर च़्य-द्वछि द्वछि..........

हर सात शांती मंज़ थाव च़्यथ च़्य-
हरशस त ख्यूबस स्वम रोज़ च़्य।
शांती प्रावय्ण यूग कर्म छी-द्वछि द्वछि..........

हर सात ध्याना दैय सुन्द रठ च़्य-
चिहस म मशराव हर नाव च़्य।
च़्यतुँच व्रती धारणाय लाग च़्य-द्वछि द्वछि..........

धर्मचि पालनाइ द्रख स्वख चाल च़्य-
तप नार पाप क्रैय वारुँ ज़ालं च़्य।
तप के बल अदुँ निर्मल बन च़्य-द्वछि द्वछि..........

सतची वथ रठ सत्यवान बन च़्य-
हर सात सतकूइ वृत दर च़्य।
सत्यचै नावि तार लगि भव सरस्य-द्वछि द्वछि..........

अहिंसा शम दम दया तुं शांती-
ध्यान धर्म तप तै सत छी।
आठ पोश पूजि़ हँदय बेबस लाग च़्य-द्वछि द्वछि..........

द्वारिका नाथ पंडिता बैबस
(सोपोर कश्मीर)



भवसर कुस तरि

आदि प्रभातन युस दैय नाव स्वरि, सुइ हा यमि भौ सरुँ तरि लो लो।
भवनाइ सान युस तस पूजा करि, सुई हा यमि भौ सरुँ तरि लो लो।।

सुलि प्रभातन श्रान संध्या करि, गरि गरि हर हर परि लो लो।
द्वख त संकट तस पान भग्वान हरि, सई हा यमि..........।।

ग्रहस्त आश्रम कूइ युस व्रत दरि, लूकुँ सीवाई प्यठ मरि लो लो।
निश्काम कर्मन लोला युस बरि, सई हा यमि..........।।

संतोश व्रच प्यठ मन युस थ्यर करि, हर सात सूइ व्रत दरि लो लो।
स्वख तै शंऽती हुंद युस हलमा बरि, सई हा यमि..........।।

श्वास ओश्वास्स देय नाव युस स्वरि, दैय सुंद ध्याना दरि लो लो।
लय रोजि़ तऽथ मँज़ कारुबारा करि, सई हा यमि..........।।

पऽछय सीवाई प्यठ पान अर्पन करि, बे लूस बाऽगरावि घरि लो लो।
डय्कुँ मचरिथ युस दान धर्मा करि, सई हा यमि..........।।

हु त बु मशरावि सारिनी लोल बरि, लोलुक सोदा करि लो लो।
ज़ीव ज़ाऽच़न सूँत लोलुँच माय बरि, सई हा यमि..........।।

काम क्रूध लूभ मोह अहँकार यस खरि, सत अस्त वारुँ सर करि लो लो।
अपज़िस दुँय करि पज़रस लोल बरि, सई हा यमि..........।।

तरवुन करनोव आलव दिवान तरि, कूँसि मा छु तरुन घरुँ लो लो।
आलुस त्राऽविथ वुध्यूग युस करि, सई हा यमि..........।।

प्रथ शयि मंज़ ज़ानुन कुस वास करि, सोरुइ कस मंज़! स्वरि लोलो।
बेबस ज़ानिथ दिहय अदुँ तयाग करि, सई हा यमि..........।।

द्वारिका नाथ पंडिता बेबस
(सोपोर कश्मीर)

शिव लीला

आशि तोशि ही सदाशिव-बोज़तम साऽ ज़ारपारैय।
आमुत छुस बुॅ डेडि तल-कर साऽ व्यन म्यून चारैय।।

यति कति लगि असि तार- द्रख दायक यि संसार।
करनोव बनिथदितुॅ तार-भौ सरुॅ वारुॅ वारैय।।

प्योमुत छुस बुॅ डेडि तल-बेकस छुस बुॅ निर्बल।
अथ डालतम सा जल जल-पननि बडि दरबारैया।।

लऽगमुॅत्य कूॅत्य् छिम शाप-जन्मन हन्दय यिम पाप।
करतम साऽ साऽरी माफ़-गाऽलिथ अहँकारैय।।

पापी छुस व ज़ामुत-हौल गन्डिथ घरि द्रामुत।
चानि आशायि अमुत-करतम साऽ ओधारैय।।

पापौव छुस व वोंलमुत-शापौव व्यसरोवमुत।
त्रयि ताप बरुॅ गोमुत-प्योमुत बेकरारैय।।

दूरय्र कति बो ज़रैय-च्य रोंछ वय्न बो मरै।
गल मा बुॅ च्यानि शरेय-दोंदमुत लोल नारैय।।

वतुॅ चानि आस गाराण-डेडितल छुस्यै प्राण।
लोल सान हलम दाराण-बरतम साऽ यकबारैय।।

लोल बोंवरमैय म्य जामन-छोन्डमख शहर गामन।
लोगथस ब लूक पामन-कोंथम न एतिबारैय।।

बेबस छुस बुॅ प्योमुत-संताप व्यसरयोमुत।
थरि पोश बरुॅ गोमुत-फ्वॅलरावुम दुबारैय।।

द्वारिका नाथ पंडिता बैबस
(सोपोर कश्मीर)